P.G.
SEM-III
Paper-14

डा० कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

(प) प्रश्न :- अरस्तू के अनुसार त्रासदी की परिभाषा देते हुए त्रासदी के प्रमुख तत्वों का निरूपण कीजिए।

उत्तर :- अरस्तु के अनुसार त्रासदी की परिभाषा :-
त्रासदी किसी गंभीर स्वत: पूर्ण तथा निश्चित आयाम से युक्त कार्य की अनुकृति का नाम है जिसका माध्यम नाटक के भिन्न-भिन्न रूप से प्रयुक्त सभी प्रकार के आभरणों से अलंकृत भाषा होती है, जो समाख्यान रूप में न होकर कार्य-व्यापार रूप में होती है और जिसमें करुणा तथा त्रास के उद्रेक द्वारा इन मनोविकारों का उचित विरेचन किया जाता है।
त्रासदी के प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं :-
(1) कथानक (2) चरित्र-चित्रण (3) पद रचना
(4) विचारतत्व (5) अलंकृत भाषा (6) संगीत

(1) कथानक :- कथानक से तात्पर्य घटनाओं के विन्यास से लिया जाता है। यह वह तत्व है जिससे पाठक परिचित नहीं होते, पर वह लेखक के मन में रहता है। अरस्तू ने कथावस्तु को काव्य की आत्मा माना है इसका कारण यह है कि त्रासदी त्रासदी कार्य तथा जीवन की अनुकृति है और जीवन की अनुकृति में कार्यव्यापार की ही प्रमुखता होती है और ये कार्य-व्यापार घटनाओं के माध्यम से ही अभिव्यक्त होते हैं।
कथानक के आधार :- अरस्तु के अनुसार कथानक के तीन आधार होते हैं :-
(1) दन्त कथाएँ :- त्रासदी के कथानक का आधार प्राय: दन्त कथाएँ होती हैं। इसमें सत्य और कल्पना का सुन्दर समन्वय रहता है।
(2) कल्पना :- कवि अपनी कल्पना से भी अनेक घटनाओं की योजना कर लेता है। ये कथानक यद्यपि प्रसिद्ध नहीं होते, पर आनन्द प्रदान करने की दृष्टि से विशेष उपयोगी हैं।
(3) इतिहास :- इतिहास की घटनाओं को भी त्रासदी के कथानक का आधार बनाया जा सकता है पर इनमें भी काव्यात्मकता होनी चाहिए।

कथावस्तु के मूल गुण :-

(1) एकान्वित :- कथानक में एकान्वित का अर्थ एक व्यक्ति की कथा से न होकर कार्य की एकता से है। अरस्तू के अनुसार, कथानक की धुरी ऐसा कार्य व्यापार होना चाहिए जिसके विभिन्न अंग परस्पर सम्बद्ध होने के साथ-साथ मूलकार्य से भी सम्बन्ध हो जिसमें कोई अनावश्यक और निरर्थक अंग न हो।

(2) पूर्णता :- त्रासदी के कथानक में पूर्णता होना भी आवश्यक है क्योंकि त्रासदी ऐसे कार्य की अनुकृति है जो समस्त एवं संपूर्ण हो और जिसमें एक निश्चित विस्तार हो।" पूर्णता से अभिप्राय यह हुआ कि कथानक की समाप्ति पर दर्शक के मन में कोई जिज्ञासा शेष न रह जाये।

(3) संभाव्यता :- कथानक में कल्पना की उड़ान ज्ञात न होकर वास्तविक जगत का ज्ञान होना चाहिए अर्थात् जिसके घटित होने की संभावना रहे। असंभव घटनाएं मानव मन ग्रहण नहीं कर पाती अतः उसकी उपयुक्तता आवश्यक है। उसका कथन है " कवि कर्म इतना ही नहीं है कि जो घटित हो चुका है उसी का वर्णन करे; बल्कि कवि उसका भी वर्णन कर सकता है जो घटित हो सकता है।"

(4) सहज विकास :- कथानक का विकास सहज रूप से होना चाहिए अर्थात संवृति विवृति स्थिति विपर्यय और अभिज्ञान आदि की अनुभूति कथानकों में से ही होनी चाहिए। घटनाएँ जब एक दूसरे का सहज परिणाम होती हैं तभी श्रोता या प्रेक्षक उन्हें ग्रहण कर पाता है। अतः सन्तुलन बनाए रखकर उनका स्वाभाविक विकास। कथानक का अन्य गुण है।

(5) कुतूहल :- प्रत्येक कथानक में मानव की कुतूहलवृत्ति को को उद्बुद्ध कर उसका परितोष करने की क्षमता होनी चाहिए। इसके लिए आवश्यक यह है कि घटनाएं अचानक ही उपस्थित हो जाएं, पर इसमें श्रृंखला विच्छिन्न न हो, यह ध्यान रहे।

(6) साधारणीकरण :- अरस्तू ने साधारणीकरण को प्रबन्ध कला का मूल आधार माना है। उनका मत है कि घटना-विन्यास करने के पूर्व कवि को अपने कथानक की एक सार्वभौम और साधारणीकरण को

आह्य रूपरेखा बना लेनी चाहिए, जो सभी के साथ तादात्म्य कर सके। इस प्रकार यह पाठक या प्रेक्षक के मन को रमा सकेगा।
कथानक के भेद :- कथानक के दो भेद हैं —
(1) सरल कथानक (2) जटिल कथानक

(4) त्रासदी में चरित्र चित्रण :- उनके अनुसार चरित्र वह है जिसके आधार पर अभिकर्ताओं में कुछ गुणों का आरोप करते हैं और इसके माध्यम से किसी व्यक्ति की रुचि - विरुचि का दर्शन होता है। इसके अतिरिक्त उन्होंने नैतिक उद्देश्य तथा वृत्ति की अभिव्यक्ति भी पात्र के माध्यम से ही मानी है।
चरित्र चित्रण के आधारभूत सिद्धांत :-
(1) भद्रता :- पात्र का भद्र होना आवश्यक है। यदि उद्देश्य भद्र है तो चरित्र भी भद्र होगा। यह गुण प्रत्येक वर्ग में संभव है - स्त्री में भी और दास में भी। यह वर्गभेद और सामाजिक स्थिति आदि से प्रभावित होते हुए भी मूलतः निरपेक्ष होता है।
(2) औचित्य :- किसी पात्र के चित्रण में उसकी प्रकृति, जाति तथा वर्गगत विशेषताओं का ध्यान रखना चाहिए। साथ ही अरस्तू ने व्यक्तिगत औचित्य का भी समर्थन किया है।
(3) जीवन के अनुरूप :- चरित्रों का जीवन के अनुरूप होना आवश्यक है अर्थात त्रासदी के पात्र जीवन्त होने चाहिए, काष्ठ की कठपुतली नहीं। पात्र प्रेक्षक पर तभी प्रभाव डालते हैं जब वे जीवन के अनुरूप हों।

(4) चरित्र [illegible] एकरूपता :- अरस्तू के अनुसार चरित्र में [illegible] ही अनेकरूपता हो [illegible] उसके चरित्र में एकरूपता होनी चाहिए। चरित्र में अस्थिरता होना तो स्वाभाविक है, क्योंकि परिस्थितियों से मानव के विचार परिवर्तित होते रहते हैं, पर कवि की दृष्टि एक सी ही रहनी चाहिए।
(5) सम्भाव्यता :- अरस्तू प्रत्येक पात्र को अपनी विशिष्टता के आधार पर बोलने और काम करने की अनिवार्यता पर बल देते हैं। यह निश्चित रूप से व्यक्ति वैशिष्ट्य की स्वीकृति है।

(6) यथार्थ और आदर्श का समन्वय :— अरस्तू का विचार है — "चूँकि त्रासदी में ऐसी व्यक्तियों की अनुकृति होती है जो सामान्य स्तर से ऊँचे होते हैं, अतः उसमें श्रेष्ठ चित्रकारों का आदर्श सामने रखना चाहिए। ये चित्रकार मूल का स्पष्ट प्रत्यंकन करने के अतिरिक्त एक ऐसी प्रतिकृति प्रस्तुत कर देते हैं।

(III) पद रचना :— पद रचना का संबंध शब्द और उसके अर्थ से है। त्रासदी का माध्यम अलंकृत भाषा होती है — ऐसी भाषा जिसमें लय, सामंजस्य और गीत का समावेश हो।" भाषा गद्य और पद्य दोनों में सामान्य रूप से रहती है। अतः त्रासदी की पद रचना अलंकृत, गरिमामय, सम्बद्ध परन्तु वाडाडम्बर से मुक्त होनी चाहिए।

(IV) विचार तत्व :— अरस्तू के अनुसार विचार का अर्थ है — प्रस्तुत परिस्थिति में जो सम्भव और संगत हो सके, उसके प्रतिपादन की क्षमता।

इस प्रकार अरस्तू का विचार तत्व से तात्पर्य बुद्धितत्व से है। साथ ही उन्होंने भावतत्व का समावेश भी इसी तत्व के अन्तर्गत कर लिया है क्योंकि करुण त्रास और क्रोध की उद्बुद्धि डा० नगेन्द्र के अनुसार बुद्धि तत्व के अन्तर्गत ही मानी जा सकती।

(V) दृश्य विधान :— इसका संबंध रंगमंच की साज सज्जा आदि से है। यह एक बाह्य प्रसाधन है जिसका संबंध ऐन्द्रिय आकर्षण से है। अरस्तू के मत में त्रासदी के सब अंगों में सबसे कम कलात्मक यही है। यह कवि की अपेक्षा मंच शिल्पी पर अधिक निर्भर रहता है। दूसरे इसके बिना त्रासदी के प्रबल प्रभाव की अनुभूति हो सकती है। अतः त्रासदी के मूल प्रभाव के लिए यह सर्वथा अनिवार्य नहीं है।

(VI) संगीत :— त्रासदी में गीत को एक प्रकार के आभरण के रूप में लिया गया है। इसका प्रयोग वृन्दगान के अन्तर्गत किया जाता है पर अरस्तू ने इसे त्रासदी का अभिन्न अंग माना है।